इंडो-पैसिफिक में अमेरिकी अड्डों का स्थानीय समाजों पर सांस्कृतिक प्रभाव

शाइस्ता

परिचय

अमेरिकी सैन्य अड्डे केवल सहयोगात्मक साधन नहीं हैं, बल्कि अमेरिका के वैश्विक प्रभुत्व और सामरिक प्रतिष्ठा के प्रतीक भी हैं। शीत युद्ध के दौरान, अमेरिका ने अपने विदेश सैन्य अड्डों को सामरिक आवश्यकता के आधार पर स्थापित किया। प्रारंभ में ये अड्डे मुख्यत: परमाणविक रोकथाम, पश्चिमी यूरोप और एशिया में अग्रिम रक्षा और समुद्री मार्गों की सुरक्षा के लिए बनाए गए। तकनीकी प्रगति जैसे लंबी दूरी के बमवर्षक ने यूरोप, एशिया और मध्य-पूर्व में बाहरी अड्डों की आवश्यकता को घटा दिया। शीतयुद्ध के बाद अमेरिका ने यूरोप और एशिया में अपने बड़े अड्डे को थोड़ा कम कर मध्य-पूर्व, अफ्रीका और मध्य एशिया में रणनीतिक आधार बनाए, ताकि क्षेत्रीय संघर्ष और आतंकवाद के ख़तरों का मुकाबला किया जा सके।[1] आज अमेरिकी सैन्य उपस्थिति वैश्विक रूप से अधिक देशों में फैली है, हालांकि अड्डे अपेक्षाकृत कम कर्मियों वाले और लचीले हैं।

इसी रणनीतिक परिप्रेक्ष्य में, अमेरिका ने बीसवीं शताब्दी के मध्य से ही इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बड़ी सैन्य मौजूदगी बनाए रखी है। जापान, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, थाईलैंड, गुआम और कई अन्य जगहों पर उसके महत्वपूर्ण सैन्य अड्डे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद और पूरे शीत युद्ध के दौरान, इस क्षेत्र में हज़ारों अमेरिकी सैनिक तैनात रहे, जिससे यह क्षेत्र अमेरिकी रणनीति का मुख्य केंद्र बन गया। लेकिन अमेरिकी सैन्य उपस्थिति सिर्फ सुरक्षा और भू-राजनीति तक सीमित नहीं रही। कई दशकों में यह अड्डे स्थानीय समाजों और संस्कृतियों के साथ गहराई से जुड़ गए। ओकिनावा, बुसान या गुआम जैसे स्थानों में लोग अमेरिकी सैनिकों को पड़ोसियों की तरह देखते हुए बड़े हुए हैं और कई छोटे शहर सैन्य जीवन की लय से बदल गए। इस लगातार संपर्क का मतलब है कि सैन्य शक्ति सिर्फ हथियारों और सैनिकों के ज़रिए नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की संस्कृति, मूल्यों और व्यवहारों के ज़रिए भी प्रभाव डालती है।

यह प्रभाव स्थानीय समुदायों पर कई तरह से पड़ा। एक ओर सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आधुनिकीकरण बढ़ा, तो दूसरी ओर सामाजिक तनाव और सांस्कृतिक

चुनौतियाँ भी सामने आईं। विद्वानों के बीच इस पर बहस है कि यह सांस्कृतिक साम्राज्यवाद है या आपसी विनिमय। व्यवहार में देखा गया कि एशियाई समाजों ने अमेरिकी प्रभावों को अपनी सुविधा के अनुसार चुना और उन्हें स्थानीय परंपराओं के साथ मिला लिया। अमेरिकी सैन्य अड्डे ऐसे स्थान बन गए जहाँ विदेशी और स्थानीय संस्कृति आपस में मिलती थीं। खाने-पीने, बोलने, पहनावे और सोच में आए कुछ बदलाव अमेरिकी प्रभाव से जुड़े थे, लेकिन इन्हें अपनाने का निर्णय स्थानीय लोगों ने खुद लिया। कुछ लोगों ने अमेरिका को स्वतंत्र और आधुनिक समाज के रूप में देखा और उसकी सफलताओं से सीखने की कोशिश की। वहीं, कुछ ने अमेरिकी संस्कृति को अपनी पहचान के लिए खतरा माना और उसका विरोध भी किया। सीउंगसूक मून ने दक्षिण कोरिया, ओकिनावा और मुख्य जापान की केस स्टडी के आधार पर बताया है कि अमेरिकी सैन्य अड्डों की उपस्थिति सिर्फ सामरिक ही नहीं, बल्कि वैश्वीकरण की अनदेखी हुई शक्ति भी है। दूसरे अर्थों में, ये अड्डे स्थानीय समाजों में वैश्विक सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को जन्म देते हैं। अमेरिकी सैन्य उपस्थिति के चलते पूर्वोत्तर एशिया में असमान सत्ता-संबंध उत्पन्न हुए हैं, जहाँ स्थानीय लोग और अमेरिकी सैन्य संरचनाओं के बीच शक्ति संतुलन बहुत असंतुलित है। मून 'उत्तर-उपनिवेशवादी एजेंसी' को आधार बनाकर मून चर्चा करती हैं कि स्थानीय समाज सिर्फ अमेरिकी प्रभुत्व के शिकार नहीं हैं, बल्कि वे सक्रिय रूप से उसकी संस्कृति को स्वीकार करते हैं और उसे दोहराते हैं।[2] स्थानीय लोग अमेरिकी अड्डों के प्रति विरोध और निर्भरता, दोनों भावनाओं को एक साथ महसूस करते हैं।

यह आलेख इसी जटिल स्थिति के दोनों पहलुओं को केस-स्टडी और स्थानीय अनुभवों के आधार पर समझने का प्रयास है। इसमें सकारात्मक प्रभावों पर ध्यान दिया है जैसे अंग्रेजी भाषा का प्रसार, अमेरिकी मीडिया और पॉप संस्कृति का प्रभाव, नए आर्थिक अवसर और नए विचारों से परिचय। अमेरिकी अड्डे कई बार आधुनिकीकरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के केंद्र बन जाते हैं। साथ ही, हम नकारात्मक पहलुओं को नहीं भूल सकते जिसमें सांस्कृतिक ह्रास, सामाजिक असमानता, समुदायों में असंतोष, लैंगिक हिंसा और पहचान संबंधी चुनौतियाँ शामिल हैं। यह दर्शाता है कि किसी विदेशी सैन्य उपस्थिति से स्थानीय सामाजिक संतुलन बिगड़ सकता है और प्रतिक्रिया भी पैदा हो सकती है। इस आलेख का उद्देश्य यह समझना है कि सैन्य शक्ति किस तरह मेज़बान देशों की संस्कृति को बदलती है और कभी-कभी झकझोर भी देती है। कई दशकों के रोज़मर्रा के अनुभव बताते हैं कि अमेरिकी सैन्य अड्डे अलग-थलग स्थान नहीं होते। वे बदलाव के ऐसे

केंद्र होते हैं जिनका असर स्थानीय भाषा, जीवन-शैली और मूल्यों तक पहुँचता है।

अमेरिकी उपस्थिति का सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र अमेरिकी राष्ट्रीय रणनीति में केंद्रीय महत्व रखता है और यहाँ बड़ी संख्या में अमेरिकी सैन्य बल तैनात हैं। क्षेत्र में 66 से अधिक महत्वपूर्ण रक्षा स्थलों के माध्यम से अमेरिका अपनी सैन्य गतिविधियों जैसे बेसिंग, रक्षा, प्रशिक्षण, रखरखाव, उपकरण भंडारण और अनुसंधान संचालित करता है। ये स्थल अमेरिका और उसके सहयोगी देशों में स्थित हैं।[3] अमेरिकी सैन्य उपस्थिति का इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में प्रभाव बीसवीं सदी के मध्य से लगातार देखा गया है, जिसमें जापान, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, थाईलैंड, गुआम और अन्य प्रमुख अड्डे शामिल हैं। द्वितीय विश्व युद्ध और शीत युद्ध के दौरान, इस क्षेत्र में लाखों अमेरिकी सैनिक तैनात रहे, जिससे यह अमेरिका के रणनीतिक हितों का अग्रिम मोर्चा बन गया। अमेरिकी अधिकारियों ने इसे अपने देश के भविष्य को परिभाषित करने वाला क्षेत्र बताया है। हालांकि, अमेरिकी सैनिकों की उपस्थिति केवल सुरक्षा और भू-राजनीति तक सीमित नहीं रही। दशकों तक अड्डों और उनके आसपास के समुदाय स्थानीय समाज और संस्कृतियों के साथ गहराई से जुड़े रहे, जिससे लगातार संवाद और सहयोग बना। ओकिनावा या बुसान जैसे स्थानों में पीढ़ियां अमेरिकी सैनिकों को पड़ोसी के रूप में देखती हुई बड़ी हुई हैं, और गुआम से मध्य थाईलैंड तक छोटे शहरों में सैन्य जीवन ने स्थानीय जीवन की लय को प्रभावित किया है। इस लगातार संपर्क का अर्थ है कि सैन्य शक्ति केवल कठोर शक्ति यानी सैनिक और हथियारों तक सीमित नहीं, बल्कि नरम शक्ति के रूप में भी काम करती है, जिसमें रोज़मर्रा की संस्कृति, मूल्य और व्यवहार शामिल हैं जो सैनिकों के साथ आते हैं।

इस प्रभाव ने मेजबान समुदायों पर जटिल प्रभाव डाले हैं। एक तरफ यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आधुनिकीकरण को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी तरफ सामाजिक तनाव और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है। विद्वान इस बात पर बहस करते हैं कि क्या इसे सांस्कृतिक साम्राज्यवाद माना जाना चाहिए या यह अधिक पारस्परिक आदान-प्रदान का रूप है। व्यावहारिक दृष्टि से, एशियाई स्थानीय आबादी प्रायः उन अमेरिकी प्रभावों को अपनाती है जो उन्हें आकर्षक लगते हैं और उन्हें अपनी परंपराओं के साथ मिलाकर स्थानीय रूप में ढाल देती है। अमेरिकी अड्डे ऐसे संपर्क क्षेत्र बन गए जहाँ विदेशी और स्थानीय संस्कृतियाँ मिलती हैं। भोजन, भाषा, पोशाक और सोच में कई

बदलाव सीधे अमेरिका के प्रभाव से हुए, लेकिन इन्हें स्थानीय लोगों के चयन और रचनात्मक अनुकूलन के आधार पर अपनाया गया। उदाहरण के लिए, कई पूर्वी एशियाई लोग अमेरिका को सबसे स्वतंत्र या आधुनिक समाज मानने लगे और उसकी सफलताओं के कुछ तत्त्वों की नकल करने लगे। वहीं, कुछ लोगों ने अमेरिकी संस्कृति के आगमन को अपनी विरासत के लिए खतरा माना और इसके विरोध के प्रयास किए।

अमेरिकी सैन्य उपस्थिति का सबसे स्पष्ट सकारात्मक प्रभाव रोज़मर्रा के सांस्कृतिक आदान-प्रदान में देखा गया है। किसी भी बेस-शहर में अमेरिकी सैनिक और स्थानीय लोग बाज़ारों, स्कूलों और सार्वजनिक स्थानों पर एक-दूसरे से मिलते हैं। गॉन नामकुंग और सुलह्युंग ली दिखाते हैं कि गुआम में अमेरिकी सैन्य अड्डे सिर्फ सुरक्षा की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आर्थिक शक्ति के प्रस्तर भी हैं। अड्डों की उपस्थिति ने गुआम की स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ाया है।[4] गुआम में अमेरिकी सैनिकों को चामोरो निवासियों के साथ स्थानीय डोनट शॉप्स या रेस्तराँ में बैठते देखना आम बात है। यह दिखाता है कि अमेरिकी अड्डे अनौपचारिक लोगों-से-लोगों के संपर्क को कैसे बढ़ावा देते हैं। समय के साथ, बेस-शहरों में भाषा, भोजन और जीवनशैली का साझा होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन गया।

भाषा का फैलाव एक विशेष प्रभाव रहा। जहां अमेरिकी सैनिक अधिक थे, वहां अंग्रेज़ी भाषा के उपयोग में तेजी आई। अमेरिकी सैनिक, उनके परिवारों के लिए स्कूल और सैन्य मीडिया चैनल अंग्रेज़ी को रोजमर्रा के जीवन में ले आए। कोरियाई संस्कृति चीन, जापानी उपनिवेशवाद और अमेरिकी सैन्य अड्डों से प्रभावित रही है। कोरिया युद्ध के बाद अमेरिकन फोर्सेज़ कोरिया नेटवर्क (AFKN) रेडियो अमेरिकी पॉप संगीत और मनोरंजन कार्यक्रमों के माध्यम से कोरियाई घरों तक पहुँचा।[5] स्थानीय संगीतकार अमेरिकी रॉक और जैज़ की नकल करने लगे, जिससे कोरियाई आधुनिक संगीत, विशेष रूप से K-पॉप, का विकास हुआ। 1960 के दशक में कोरिया के कलाकारों ने अमेरिकी जैज़ और रॉक संगीत को कोरियाई संगीत में मिलाया। इसी तरह, जापान में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी रेडियो और सिनेमा ने जैज़, स्विंग और हॉलीवुड फिल्मों के माध्यम से पश्चिमी लोकप्रिय संस्कृति को परिचित कराया। 1970 के दशक तक जापानी और कोरियाई युवा अमेरिकी पॉप संस्कृति और अपनी स्थानीय परंपराओं दोनों से परिचित हो गए थे। कोरिया की 'K-संस्कृति' में कॉफी शॉप, फैशन, कॉस्मेटिक्स जैसे पश्चिमी प्रभाव भी शामिल हैं। लोककथा (फोकलोर) विशेषज्ञ जू यंग-हा के अनुसार, विदेशी लोग चिमैक (चिकन और बीयर) को पसंदीदा कोरियाई भोजन मानते हैं, जबकि अधिकांश कोरियाई इसे

पारंपरिक भोजन नहीं मानते।[6]

अमेरिकी सैनिकों ने एशिया में खेलों और मनोरंजन को भी प्रभावित किया। बेसबॉल और बास्केटबॉल जैसे खेलों को अमेरिकी सैनिकों ने स्थानीय लोगों के साथ खेलने और लीग आयोजित करने के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। जापान, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस और ताइवान में इन खेलों के आयोजन ने नई प्रतिभाओं को उभरने का अवसर दिया, जिससे ये खेल राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित हो गए। बेसबॉल की पुनः लोकप्रियता, विशेषकर कोरिया और ताइवान में, अमेरिकी सैनिकों की प्रेरणा और प्रशिक्षण का परिणाम रही।

स्थानीय खानपान, फैशन और उपभोक्ता संस्कृति में अमेरिकी उत्पादों और व्यवहार का प्रवेश भी महत्वपूर्ण रहा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अमेरिकी अड्डे अमेरिकी खाद्य और उपभोक्ता वस्तुओं के प्रवाह का केंद्र बने। लंच मीट इसका एक प्रमुख उदाहरण है। दक्षिण कोरिया, ओकिनावा, गुआम और फिलीपींस में अमेरिकी सैनिकों के लिए SPAM की आपूर्ति ने इसे स्थानीय खानपान का हिस्सा बना दिया। दक्षिण कोरिया में युद्ध के बाद लोगों ने अमेरिकी राशन और कोरियाई सामग्री को मिलाकर बुदे-जिजिगे ('आर्मी बेस स्ट्यू') बनाया, जो आज भी लोकप्रिय है। ओकिनावा का टैको-राइस भी इसी सांस्कृतिक मेल का उदाहरण है, जिसमें टेक्स-मेक्स शैली की टैको सामग्री जापानी चावल पर परोसी गई। अमेरिकी उपस्थिति ने उपभोक्ता वस्तुओं, जैसे कोका-कोला और चॉकलेट बार को स्थानीय बाजार में प्रवेश दिया। समय के साथ, इन उत्पादों को स्थानीय समाज ने अपनाया और उनमें अपनी पहचान और रचनात्मकता जोड़ी।

अमेरिकी अड्डों ने स्थानीय रोजगार और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित किया। बेसों ने स्थानीय लोगों को कर्मचारी, निर्माण ठेकेदार, दुकानदार और अनुवादक के रूप में काम दिया। बेस-शहरों में दुकानों, रेस्तराँ, मनोरंजन और आवासीय इलाकों के विकास से स्थानीय अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ। थाईलैंड में वियतनाम युद्ध के दौरान उपटाओ और नाखोन फानोम में अमेरिकी उपस्थिति ने सड़कें, हवाई पट्टियाँ और अस्पताल तैयार किए, जो बाद में नागरिक जरूरतों के लिए उपयोग किए गए। गुआम में स्थानीय नेता अमेरिकी सैनिकों की उपस्थिति को 'पारस्परिक संबंध' मानते हैं, जिसने उपभोक्ता मांग बढ़ाई और नई उद्योगों की संभावनाएँ पैदा की। अमेरिकी सैन्य लॉजिस्टिक्स ने दूरस्थ द्वीपों को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ा और अनुबंधों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और विशेषज्ञता को स्थानीय स्तर पर लाया।

सैनिकों के सामुदायिक और शैक्षिक कार्यक्रमों ने स्थानीय लोगों को कौशल

और प्रशिक्षण प्रदान किया। कई देशों में लोग अंग्रेजी और तकनीकी कौशल सीखने लगे ताकि वे बेस में काम कर सकें, जिससे उनके करियर में भी मदद मिली। जापान और दक्षिण कोरिया में कई पीढ़ियों ने अमेरिकी अड्डों में काम करके अंग्रेजी और पेशेवर कौशल विकसित किए। स्थानीय युवा रोज़मर्रा की संपर्क में अंग्रेजी सीखते और इससे उन्हें पर्यटन या अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय में लाभ हुआ। अमेरिकी सैनिक भी स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ाते, खेल कोचिंग देते और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते।

अमेरिकी अड्डों के माध्यम से युवाओं और बुद्धिजीवियों ने अमेरिकी लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समानता और अधिकारों के प्रति जागरूकता प्राप्त की। जापान में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी प्रशासन ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और महिलाओं को मताधिकार जैसी सुधारात्मक नीतियाँ लागू कीं। दक्षिण कोरिया और ताइवान में 1950 के दशक में भूमि सुधार और स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा दिया गया, जिससे नागरिकों को सीमित लोकतंत्र का अनुभव मिला। अमेरिकी उपस्थिति के माध्यम से स्थानीय लोग अमेरिकी समाज, नस्लीय विविधता और लैंगिक समानता से परिचित हुए। अमेरिकी सैनिकों का विविधता में काम करना और महिलाओं का तुलनात्मक रूप से समान व्यवहार स्थानीय समाज में सामाजिक और लैंगिक दृष्टि से नए विचारों को जन्म देता है।

अमेरिकी सैन्य उपस्थिति ने इंडो-पैसिफिक में सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया। अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी मीडिया का विस्तार हुआ, युवा पीढ़ियों में अमेरिकी संगीत, टेलीविजन, फैशन और भोजन लोकप्रिय हुए। स्थानीय स्वाद और परंपराओं के साथ इनका रचनात्मक मिश्रण, जैसे ओकिनावा का टैको-राइस या कोरियाई पॉप संगीत में हिप-हॉप तत्त्व उभरा। आर्थिक रूप से, सैन्य बेसों ने स्थानीय अर्थव्यवस्था और जीविकोपार्जन में अहम योगदान दिया। अमेरिकी सैनिकों और स्थानीय समुदायों के बीच निकट संपर्क ने स्थानीय लोगों को अमेरिकी आदर्शों और मूल्यों की अनौपचारिक शिक्षा दी। यह आदान-प्रदान एकतरफा नहीं था। अमेरिकी सैनिकों ने भी स्थानीय भाषाएँ, भोजन और रीति-रिवाज सीखे। वापस लौटकर उन्होंने जापानी कराटे और कोरियाई बुलगोगी जैसी चीज़ों को अमेरिका में लोकप्रिय बनाया, जिससे अमेरिका में भी 'एशियाईकरण' के छोटे-छोटे रूप देखने को मिले। इस तरह अमेरिकी सैनिक अनौपचारिक सांस्कृतिक राजदूत बने। सैन्य अड्डे केवल रणनीतिक केंद्र नहीं, बल्कि लोगों के बीच संपर्क और साझा संस्कृति के केंद्र बन गए।

नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव और सामाजिक तनाव

पूर्वउल्लेखित सकारात्मक प्रभावों के बावजूद, अमेरिकी अड्डों ने इंडो-पैसिफिक समुदायों में कई नकारात्मक सांस्कृतिक और सामाजिक परिणाम भी उत्पन्न किए हैं। एक प्रमुख चिंता यह है कि अमेरिकी प्रभाव के दबाव में स्थानीय संस्कृति का क्षरण होना। विशेष रूप से उन स्थानों में जहाँ अमेरिकी उपस्थिति लंबे समय से है, कुछ लोग डरते हैं कि पारंपरिक रीति-रिवाज़, स्वदेशी भाषाएँ और राष्ट्रीय पहचान पश्चिमीकरण के कारण कमजोर हो रहे हैं। ओकिनावा में अमेरिकी बलों का बहुत बड़ा हिस्सा स्थित है और वहाँ के कई स्थानीय लोग अड्डों से न केवल भौतिक असुविधाओं के लिए नाराज़ हैं, बल्कि अपनी अनूठी संस्कृति पर मंडराते खतरे के कारण भी। उनका तर्क है कि विदेशी सैनिकों की लगातार उपस्थिति और उनका अमेरिकन जीवनशैली अपनाना ओकिनावाई संस्कृति, परंपराओं और पहचान को खतरे में डालती है।

पुरानी पीढ़ियाँ प्राय: यह दुख जताती हैं कि युवा अमेरिकी पॉप संस्कृति को अपना रहे हैं और ओकिनावा की अपनी विरासत भूल रहे हैं। एक इतिहासकार के अनुसार, सांस्कृतिक बदलाव 'कभी भी बिना मूल्य के नहीं होता। कुछ लोग अमेरिकीकरण को अपनी परंपराओं के लिए खतरा मानते हैं, और समाज के वरिष्ठ सदस्य इसे दुखद पाते हैं जब उनकी अनुभवहीनता और परंपराएँ पोते-पोतियों द्वारा नजरअंदाज की जाती हैं।' यह उस गहरी क्षति की भावना को दिखाता है जो लोग महसूस करते हैं, जब पश्चिमी प्रभाव के कारण सदियों से विकसित प्रथाएँ बदलती या गायब होती हैं। दरअसल अमेरिकी सेना पूरे द्वीप का 20 प्रतिशत हिस्सा नियंत्रित करती है, और जापान में अमेरिकी उपस्थिति का 75 प्रतिशत ओकिनावा द्वीप पर केंद्रित है। दशकों से, ओकिनावाई लोग जेट और हेलीकॉप्टर दुर्घटनाओं, घनी आबादी वाले इलाकों में पर्यावरणीय प्रदूषण और अमेरिकी सैनिकों द्वारा यौन हिंसा जैसी घटनाओं का असमान भार झेलते आए हैं।[7] फिलीपींस और ओकिनावा में अड्डों के खिलाफ स्थानीय जनता का विरोध इसी प्रकार की घटनाओं के साथ बढ़ता गया है। उदाहरण के लिये मई 2016 में, एक अमेरिकी मरीन द्वारा जापानी पर्यटक के साथ बलात्कार और एक पूर्व मरीन द्वारा स्थानीय महिला की हत्या ने ओकिनावा में जनता में गुस्से और विरोध को भड़का दिया था। मामला इतना गंभीर हो गया कि अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सार्वजनिक माफी माँगनी पड़ी। उन्होंने इस अपराध से जापान में उत्पन्न आक्रोश को स्वीकार किया और जांच में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया क्योंकि यह घटना अमेरिका-जापान संबंधों और विवादित फुतेनमा बेस के स्थानांतरण को प्रभावित

कर सकती थी।[8]

दक्षिण कोरिया में भी अमेरिकी प्रभाव के तीव्र दौर ने उन लोगों में प्रतिरोध पैदा किया, जो कोरियाई सांस्कृतिक शुद्धता खोने के डर से चिंतित थे। उदाहरण के लिए, 1970 के दशक में राष्ट्रपति पार्क चुंग-ही की सरकार ने कई अमेरिकी पॉप गीतों और फैशन को कोरियाई समाज के लिए 'अस्वस्थ' बताते हुए उन पर प्रतिबंध लगा दिया था। यह आम तनाव को दिखाता है जहां अमेरिकी संस्कृति युवा और उत्साही लोगों को आकर्षित करती है, वहीं कई स्थानीय लोग इसे अपनी राष्ट्रीय पहचान के लिए खतरे के रूप में देखते हैं। विभिन्न देशों में आलोचकों ने इसे 'सांस्कृतिक प्रदूषण' या 'कोका-उपनिवेशवाद' कहा है, जो स्थानीय मूल्यों की कीमत पर अमेरिकी उपभोक्तावाद के फैलाव को दर्शाता है।

अमेरिकी उपस्थिति अपनी दृश्यता के कारण कभी-कभी पहचान के संघर्ष को भी बढ़ाती है। गुआम या ओकिनावा जैसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग अपनी स्वदेशी जड़ों के प्रति वफादारी और चारों ओर फैली अमेरिकी सैन्य संस्कृति के बीच उलझन महसूस कर सकते हैं। युवा अमेरिकी स्लैंग, छुट्टियाँ (जैसे बेस पर हैलोवीन पार्टियाँ) या फास्ट-फूड की आदतों को अपनाते हुए बड़े होते हैं, जो उन्हें बुजुर्गों या गैर-बेस क्षेत्रों के साथियों से अलग कर देता है और आंतरिक सांस्कृतिक विभाजन पैदा करता है।

दक्षिण कोरिया में अमेरिकी सैनिकों की तैनाती ने बीसवीं शताब्दी के मध्य से एक ऐसी सामाजिक दुनिया बनाई जिन्हें 'कैम्पटाउन' कहा गया। ये वो इलाके बने जहां नृत्यगृह और ऐसे अनेक स्थल विकसित हुए जहाँ सैनिकों के आराम और मनोरंजन की व्यवस्था की जाती थी।[9] यह सिर्फ युद्धकालीन परिस्थिति का परिणाम नहीं था, बल्कि सैन्य उपस्थिति के इर्द-गिर्द उभरती आर्थिक संरचना का हिस्सा था। यूरी डूलान का शोध बताता है कि इन इलाकों में काम करने वाली अधिकांश कोरियाई महिलाएँ भारी आर्थिक तंगी, परिवारों के बिखराव और सामाजिक असुरक्षा की वजह से यहाँ पहुँचीं। इन महिलाओं पर परिवार चलाने की जिम्मेदारी थी, और उनके पास रोज़गार के अन्य अवसर बहुत सीमित थे। अमेरिकी और कोरियाई सरकारों ने विभिन्न चरणों में इन इलाक़ों को नियंत्रित और संरक्षित किया ताकि सैनिकों की ज़रूरतें पूरी हों और सैन्य गठबंधन बिना रुकावट चलता रहे।[10] सैनिकों की सुविधा को युद्ध से लेकर कूटनीति तक का हिस्सा माना गया, और महिलाओं के शरीर इस राजनीतिक गठबंधन का अनकहा स्तंभ बन गए। इन इलाकों की विरासत आज भी कई परिवारों, विशेषकर मिश्रित नस्ल के बच्चों और बाद में अमेरिका आने वाली कोरियाई महिलाओं के जीवन में दिखाई देती है। उनकी पहचान, सामाजिक

स्वीकृति और अस्तित्व की चुनौतियाँ सीधे उस इतिहास से जुड़ी हैं जिसे लंबे समय तक नज़रअंदाज़ किया गया।

सच्चाई यह है कि कई स्थानों में पहचान का संघर्ष गहरा है। उदाहरण के लिए, गुआम के स्वदेशी चामोरो लोग अमेरिकी क्षेत्र के होने के कारण अमेरिकी नागरिक हैं और कई पीढ़ियों से गर्व से अमेरिकी सशस्त्र बलों में सेवा दे चुके हैं। फिर भी, गुआम में गहरी दुविधा मौजूद है। गॉन नामकुंग और सुलह्युंग ली ने दर्शाया है कि गुआम एक 'अ-समेकित' अमेरिकी क्षेत्र है। यानि, वहाँ के निवासी अमेरिकी नागरिक तो हैं, लेकिन उनकी राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व सीमित है।[11] चामोरो प्राय: कागज पर 'अमेरिकी' होने और वास्तविक जीवन में समानता और मान्यता न पाने के बीच संघर्ष करते हैं।[12] यह भावनात्मक अलगाव उन अनुभवों से बढ़ता है, जैसे कि अमेरिकी आम चुनावों में वोट न कर पाना (युद्ध में जान गंवाने के बावजूद) और गुआम को अमेरिकी मीडिया में प्राय: केवल 'रणनीतिक संपत्ति' के रूप में देखना। सैन्य प्रभुत्व इस उपनिवेशी गतिशीलता को और मजबूत करता है। युवा चामोरो भारी सैन्य वातावरण में बड़े होते हैं, जो उनकी आकांक्षाओं और मानदंडों को प्रभावित करता है। कई लोग अमेरिकी सेना में शामिल होना सफलता का एकमात्र स्थिर मार्ग मानते हैं।

अपनी विशिष्ट स्वदेशी पहचान बनाए रखने और अमेरिकी सैन्य दृष्टिकोण अपनाने के बीच यह आंतरिक संघर्ष मानसिक और सामाजिक तनाव पैदा कर सकता है। इससे सांस्कृतिक हीनता या निर्भरता की भावना उभर सकती है, जबकि अपनी विरासत पर गर्व बना रहता है। इसी तरह, ओकिनावा में एक विशिष्ट रियुक्यूआनी पहचान अमेरिकी अड्डों के विरोध में पुन: प्रकट हुई है। ओकिनावाई, जो ऐतिहासिक रूप से जापान में पूरी तरह शामिल नहीं हुए थे, अब अपने आप को स्वदेशी लोगों के रूप में पहचानते हैं जिन्हें पहले टोक्यो और अब अमेरिका-जापान गठबंधन ने अपना उपनिवेश बनाया। वे अपनी अनूठी भाषा, इतिहास और परंपराओं पर जोर देते हैं, जो जापानी और अमेरिकी प्रभाव दोनों से अलग हैं। अमेरिकी सैन्य अड्डों के विवाद में, स्थानीय नेता रियूक्यू साम्राज्य की समृद्धि और शांति, जापानी उपनिवेशवाद की पीड़ा, तथा अन्याय और संघर्ष के विरुद्ध प्रतिरोध की कहानियों का उपयोग कर ओकिनावा की विशिष्ट और त्रासद इतिहास को उजागर करते हैं।[13] यह साझा पहचान स्थानीय एकता और राजनीतिक संघर्ष को मजबूती देती है।

इन क्षेत्रों में अनसुलझे पहचान संघर्ष सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों जैसे विरोध

गीतों, साहित्य और कला में दिखते हैं, जो विदेशी सैन्य प्रभुत्व के तहत स्वायत्तता और प्रामाणिकता की हानि का शोक व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, ओकिनावा के लोक संगीतकार अपने देश को रणनीतिक अड्डे में बदल दिए जाने के बारे में भावुक गीत लिखते हैं। वहीं, चामोरो कवि पूछते हैं कि जब अंग्रेजी और अमेरिकी मानदंड द्वीप पर प्रमुख हैं, तो चामोरो संस्कृति में क्या बचता है। रोज़मर्रा की भाषा का इस्तेमाल ही इस तनाव को दर्शाता है। गुआम में, अमेरिकी शासन ने स्कूलों में अंग्रेजी को लागू किया और कभी-कभी चामोरो भाषा पर प्रतिबंध लगाया, जिससे युवा पीढ़ियों में इसकी गंभीर गिरावट हुई। आज अधिकांश युवा चामोरो अंग्रेजी को पहली भाषा के रूप में बोलते हैं और चामोरो को पूरी तरह समाप्त होने से बचाने के प्रयास चल रहे हैं।[14] यह भाषा परिवर्तन अमेरिकी उपस्थिति और नीतियों का प्रत्यक्ष सांस्कृतिक प्रभाव है और बुजुर्गों में यह भावना पैदा करता है कि उनकी पहचान वास्तव में खो रही है।

एक अन्य नकारात्मक प्रभाव है सामाजिक और आर्थिक असमानता और न्याय की कमी की भावना। अमेरिकी अड्डों की उपस्थिति दो-स्तरीय समाज पैदा कर सकती है। एक वर्ग सैन्य अड्डे से जुड़ी सुविधाओं का आनंद लेता है, जबकि दूसरा हिस्सा उन लाभों से वंचित रह जाता है। एक तरफ अमेरिकी सैनिक और बेस में कार्यरत स्थानीय नागरिक बेहतर सुविधाओं, स्थिर आय और विशेष छूट का लाभ उठाते हैं, जबकि सामान्य नागरिक अपने ही शहर में दोयम दर्जे का नागरिक महसूस कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, गुआम में स्थानीय वकील बताते हैं कि अमेरिकी सैन्य आवास भत्ते किराए बढ़ा देते हैं जो गैर-सैनिक निवासियों के लिए महंगा हो जाता है। कुछ वस्तुओं पर विशेष सैन्य छूट होती है जो स्थानीय नागरिकों को उपलब्ध नहीं होती। इससे उन निवासियों में नाराजगी उत्पन्न होती है जो उच्च जीवन लागत के साथ संघर्ष करते हैं और देखते हैं कि अमेरिकी और सैन्य अड्डे से जुड़े स्थानीय लोग अपेक्षाकृत आरामदायक जीवन जी रहे हैं।

संतुलन की आवश्यकता

अमेरिका की सैन्य उपस्थिति का इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सांस्कृतिक प्रभाव गहरा और दोहरा है। एक ओर, अमेरिकी अड्डे सांस्कृतिक आदान-प्रदान के केन्द्र रहे हैं जिसने भाषा कौशल, नई संगीत शैलियाँ, भोजन और विचारों का प्रसार किया है। इसने स्थानीय संस्कृतियों को जीवन्त बनाया और उन्हें वैश्विक प्रवाहों से जोड़ दिया। कई समुदायों को आर्थिक प्रोत्साहन मिला और उन्होंने अमेरिकी संस्कृति के तत्वों को अपनी शर्तों पर अपनाया, जिससे एक विशिष्ट स्थानीय मिश्रण तैयार हुआ। अमेरिकी सैन्य शहर प्रायः

बहुसांस्कृतिक स्थल बन गए, जहाँ किसान के बेटे ने एक अमेरिकी सैनिक पड़ोसी से थोड़ी अंग्रेजी सीखी, या स्थानीय बैंड ने अड्डे के क्लब में रॉक और रोल के रिफ़ आजमाए। जिन व्यक्तियों को इन अवसरों तक पहुँच मिली, उनके लिए अमेरिकी सैन्य उपस्थिति ने व्यापक दुनिया के दरवाजे खोल दिये।

दूसरी ओर, वही अमेरिकी उपस्थिति सांस्कृतिक ह्रास, सामाजिक तनाव और नाराजगी भी पैदा करती है। पश्चिमी प्रभावों के कारण पारंपरिक जीवन की संरचना कमजोर हुई, जिससे कभी-कभी सामुदायिक नियम टूट गए और अड्डा आधारित अर्थव्यवस्था से जुड़े लोगों और पीछे छूटे लोगों के बीच दूरी बढ़ गई। अड्डा कर्मियों के अनुचित व्यवहार और हिंसा ने स्थायी घाव छोड़े और विदेशी कब्ज़ा और उपनिवेशवाद के नेरेटिव मजबूत किये। यहाँ तक कि अमेरिकी गठबंधन के लाभ मानने वाले लोग भी दूसरों की सुरक्षा के लिए असमान बोझ उठाने की बात करते हैं। पहचानें जटिल हो गई हैं। कुछ व्यक्ति अमेरिकी आदर्शों और सैन्य सेवा पर गर्व महसूस करते हैं, जबकि अन्य खुद को थोपे गए विदेशी बल के विरोध में परिभाषित करते हैं। यह द्वैत एक ही परिवार में भी हो सकता है, जैसे ओकिनावाई दादा जो युद्धकाल की पीड़ा याद करता है और अड्डों से नफरत करता है और उसकी पोती जो अड्डे पर काम करती है और अमेरिकी संगीत पसंद करती है। सैन्य उपस्थिति से उत्पन्न सांस्कृतिक वैश्वीकरण की यह विरोधाभासी स्थिति है।

उल्लेखनीय है कि ये प्रभाव हर जगह समान नहीं हैं। उदाहरण के लिए, जापान और दक्षिण कोरिया में राष्ट्रीय स्तर पर अमेरिकी गठबंधन के प्रति आम राय सामान्यत: सकारात्मक है। फिर भी, अड्डों वाले शहरों में दैनिक झंझटों के कारण संदेह और नकारात्मक दृष्टिकोण भी मौजूद हैं। टोक्यो या सियोल के युवा पेशेवर अमेरिकी संस्कृति को सराहते हैं और गठबंधन का स्वागत करते हैं, जबकि फुतेनमा या कैंप हम्फ्रीज के आसपास के ग्रामीण लोग अमेरिकी उपस्थिति को मुख्यत: विमान शोर या खोए खेतों से जोड़ते हैं। इसी तरह, फिलीपींस और थाईलैंड में अमेरिकी अड्डों की उपस्थिति का प्रभाव मिश्रित रहा। कुछ के लिए अड्डों ने समृद्धि और बहुसांस्कृतिक अनुभव दिए जबकि दूसरों के लिए 1990 के दशक में अड्डे बंद होने पर संप्रभुता की पुन: प्राप्ति हुई।

अमेरिकी उपस्थिति के बाद, पूर्व अड्डों के आसपास के फिलिपीनी शहर आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहे थे, लेकिन राष्ट्रवादी भावना और अड्डों की भूमि को स्थानीय उपयोग में लाने की क्षमता में सुधार भी देखा गया। प्रशांत द्वीप जैसे गुआम और मार्शल द्वीप अमेरिकी सैनिकों को कभी संरक्षक, कभी अधिनिवेशकर्ता के रूप में देखते हैं। एक ही अमेरिकी

मरीन किसी परिवार के लिए मित्रवत पड़ोसी हो सकता है और दूसरे के लिए अवांछित अधिनिवेशक। अमेरिकी सेना ने कभी-कभी सामुदायिक कार्यक्रम, सैनिकों पर कड़ी अनुशासन व्यवस्था, भूमि वापसी और पर्यावरण सुधार जैसी पहलें करके नकारात्मक प्रभाव कम करने की कोशिश की है। उदाहरण के लिए, ओकिनावा में मध्यरात्रि कर्फ्यू और स्थानीय कानून-सभ्यता पर शिक्षा दी गई। इन कदमों का कुछ सकारात्मक असर पड़ा, यह दिखाते हुए कि स्थानीय आवाज सुनी जाए तो सुधार संभव है। फिर भी, रणनीतिक हितों और स्थानीय भलाई के बीच संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि बड़े विदेशी अड्डों के कारण शक्ति असंतुलन और तनाव हमेशा मौजूद रहते हैं।

इंडो-पैसिफिक में अमेरिकी अड्डों की कहानी एक सांस्कृतिक विरोधाभास है। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा और लोकतांत्रिक आदर्शों को बढ़ावा दिया, फिर भी कभी-कभी उन्हें वास्तव में आत्मनिर्णय और लोकतंत्र के लिए बाधा के रूप में देखा गया। उन्होंने आधुनिक सुविधाएँ और वैश्विक सम्पर्क बढ़ाया जबकि कुछ स्थानों पर स्थानीय परंपराओं और व्यक्तिगत सुरक्षा की पवित्रता को कमजोर किया। सुरक्षा प्रदान करने के लिए की गई उपस्थिति, कुछ समुदायों में असुरक्षा का कारण बन गई। इस द्वैत को समझना नीति निर्माताओं और समुदायों दोनों के लिए अनिवार्य है। अड्डों और गठबंधन नीति के निर्णय केवल रणनीतिक गणनाओं पर नहीं होने चाहिए। इन्हें उन लोगों के अनुभवों को भी ध्यान में रखना चाहिए जो इन अड्डों के साथ रहते हैं।

ओकिनावा की स्वतंत्र मानसिकता से लेकर फिलिपींस के भूले हुए अमेरासियन बच्चों तक के मामलों का अध्ययन दिखाता है कि सांस्कृतिक प्रभाव सैन्य तैनाती की रणनीतिक समयसीमाओं से कहीं अधिक लंबे समय तक रह सकते हैं। सैन्य तैनातियाँ अस्थायी या वैश्विक राजनीति के अनुसार बदल सकती हैं, लेकिन उनके द्वारा छोड़े गए सांस्कृतिक परिवर्तन और स्मृतियाँ पीढ़ियों तक जीवित रहती हैं। क्षेत्र में किसी भी दीर्घकालीन अमेरिकी उपस्थिति को स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार सावधानीपूर्वक संभालना होगा, ताकि वास्तविक आदान-प्रदान और पारस्परिक सम्मान बढ़े और नुकसान कम से कम हो। इसका मतलब है अधिक पारदर्शिता, सैनिकों को स्थानीय रीति-रिवाजों की शिक्षा देना, अड्डा क्षेत्रों में सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करना और समस्याओं पर ईमानदारी से प्रतिक्रिया देना।

प्रशांत द्वीपों में बने सैन्य अड्डों, परमाणु परीक्षणों और पर्यावरणीय दोहन ने स्थानीय समाजों की ज़मीन, समुद्री आजीविका और सांस्कृतिक आधार को गंभीर रूप से

प्रभावित किया है। द्वीपीय समुदायों के अनुभव लगातार बताते हैं कि सैन्य रणनीतियों का भार सबसे अधिक छोटे, सीमांत और राजनीतिक रूप से उपेक्षित समूहों पर पड़ता है, जबकि इन फैसलों में उन्हें कोई वास्तविक भूमिका नहीं मिलती। इसके बावजूद, स्थानीय लोगों, पर्यावरण आंदोलनों और स्वदेशी नेतृत्व ने इन सैन्यीकृत संरचनाओं का साहसपूर्वक सामना किया है।[15] उनके संघर्षों ने न केवल उपनिवेशवादी सोच और सैन्य नियंत्रण की आलोचना को तेज किया, बल्कि एक ऐसे भविष्य की ओर संकेत दिया है जहाँ एशिया-प्रशांत क्षेत्र सैन्य दबाव से मुक्त होकर अपने सांस्कृतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय मूल्यों के आधार पर आगे बढ़ सके।

इसी पृष्ठभूमि में, जब इंडो-पैसिफिक देशों और अमेरिका द्वारा सैन्य अड्डों के भविष्य – उन्हें बनाए रखने, बढ़ाने या पुनर्गठित करने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है, तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि स्थानीय समुदायों की आवाज को केंद्र में रखा जाए। उनके अनुभव स्पष्ट करते हैं कि सैन्य शक्ति केवल हथियारों या सैनिकों तक सीमित नहीं होती, वह लोगों की भावनाओं, निर्णयों और रोज़मर्रा के जीवन को भी बदल देती है। आज जब 21वीं सदी में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का भू-राजनीतिक महत्व तेजी से बढ़ रहा है और चीन के विरुद्ध अमेरिका अपनी उपस्थिति को मजबूत करने की कोशिश कर रहा है तो इतिहास यही सिखाता है कि किसी भी रणनीतिक कदम की सफलता तभी संभव है जब उसके सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को संवेदनशीलता के साथ समझा और संभाला जाए।

निष्कर्ष

यह आलेख स्पष्ट करता है कि शीत युद्ध और उसके बाद अमेरिका ने अपनी सैन्य रणनीति को वैश्विक स्तर पर पुनर्विन्यासित किया। यूरोप और एशिया से मध्य-पूर्व, अफ्रीका और विशेषकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्रों की ओर ध्यान केंद्रित हुआ। जापान, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, थाईलैंड और गुआम जैसे स्थान अमेरिकी रणनीति के प्रमुख केंद्र बने, जहाँ सैन्य अड्डों ने स्थानीय जीवन, संस्कृति और अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला। अमेरिकी सैनिकों और स्थानीय समाजों के निरंतर संपर्क ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया, जिससे भाषा, खानपान, खेल, उपभोक्ता संस्कृति और सामाजिक व्यवहार में नए स्वरूप उभरे। इस प्रक्रिया में स्थानीय समाज ने अमेरिकी प्रभावों को अपनाया, अनुकूलित किया और अपनी सांस्कृतिक पहचान के साथ संतुलित किया। हालांकि यह उपस्थिति सामाजिक तनाव, असमान सत्ता-संबंध और अनेक सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी लेकर आई।

इंडो-पैसिफिक में अमेरिकी सैन्य अड्डों की कहानी यह दर्शाती है कि सुरक्षा और सैन्य शक्ति केवल हथियारों तक सीमित नहीं रहती। इसका असर रोज़मर्रा के जीवन, पहचान और सामाजिक संरचनाओं तक फैलता है। भविष्य में अमेरिका के लिये चुनौती यह होगी कि अमेरिकी सैन्य उपस्थिति के कारण जो भी सांस्कृतिक बदलाव हो वह सहयोग और संवाद के माध्यम से हो, न कि थोपे गये रणनीतिक निर्णयों के रूप में। केवल कठोर सैन्य शक्ति और नरम सांस्कृतिक समझ के संतुलन से ही अमेरिका और उसके सहयोगी लंबे समय तक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थायी और लाभकारी साझेदारी बनाए रख सकते हैं।

संदर्भ

1. एंड्रयू यो और स्टेसी पेटीजॉन, 'बेसेज ऑफ एम्पायर? द लॉजिक ऑफ ओवरसीज़ यू.एस. मिलिटरी बेस एक्सपैंशन, 1870-2016', *कम्पेरेटिव स्ट्रैटेजी,* अंक 40, नं. 1, 2021, पृ. 18-35
2. सुड्सूक मून, 'इण्ट्रोडक्शन टू कल्चर अराउंड द बेसिज़: ए फोरम ऑन द यू.एस. मिलिटरी प्रेजेन्स इन नॉर्थ-ईस्ट एशिया', *द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़,* अंक 75, नं. 1, 2016, पृ. 31-39
3. सीआरएस रिपोर्ट, 'यू.एस. डिफ़ेन्स इन्फ्रास्ट्रक्चर इन द इंडोपैसिफिक: बैकग्राउंड एंड इश्यूज फॉर कॉन्ग्रेस', कॉन्ग्रेशनल रिसर्च सर्विस, आर 47589, जून 2023
4. गॉन नामकुंग और सुलह्युंग ली, 'यू.एस. पावर पेनिट्रेशन थ्रू द मिलिटरी बेसिज़ इन गुआम', *जर्नल ऑफ इण्टरनेशनल एंड एरिया स्टडीज़,* अंक 19, नं. 2, दिसंबर 2012, पृ. 29-46
5. जॉन ली, *के-पॉप पॉप्युलर म्यूज़िक, कल्चरल अम्नीज़िया, एंड इकॉनमिक इनोवेशन इन साउथ कोरिया,* यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2015
6. जेसन एम. चुन और यून बिन सुक, 'अम्बेसडर्स ऑफ के-कल्चर: कोरियन अमेरिकन्स, कोरिया, एंड के-पॉप', *इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एशियन स्टडीज़, न्यूज़लेटर 93,* ऑटम, 2022
7. ज़ोल्टान ग्रॉस्मैन, 'एम्पायर ऑफ बेसिज़', *मंथली रिव्यू,* अंक 68, नं. 07, दिसंबर 2016
8. जस्टिन मैककरी, 'ओबामा एक्सप्रेसेस रिग्रेट ओवर अलिज्ड मर्डर बाय यूएस बेस वर्कर इन जापान', *द गार्जियन,* 25 मई, 2016

9. जी-यॉन युह, *बियॉन्ड द शैडो ऑफ कैम्पटाउन: कोरियन मिलिटरी ब्राइड्स इन अमेरिका,* न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004

10. यूरी डब्ल्यू. डूलान, 'ट्रांसपैसिफ़िक कैम्पटाउन्स: कोरियन वीमेन, यू.एस. आर्मी बेसिज़, एंड मिलिटरी प्रॉस्टिट्यूशन इन अमेरिका', *जर्नल ऑफ अमेरिकन एथनिक हिस्ट्री,* अंक 38, नं. 4, 2009, पृ. 33-54

11. गॉन नामकुंग और सुलह्युंग ली, 'यू.एस. पावर पेनिट्रेशन थ्रू द मिलिटरी बेसिज़ इन गुआम', *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल एंड एरिया स्टडीज़,* अंक 19, नं. 2, दिसंबर 2012, पृ. 29-46

12. कैथरीन लुट्ज़, 'यूएस मिलिटरी बेसिज़ ऑन गुआम इन ग्लोबल पर्सपेक्टिव', *द एशिया-पैसिफिक जर्नल: जापान फोकस,* अंक 8, नं. 30, आर्टिकल आईडी 3389, जुलाई 2010

13. मोनिका फ्लिंट, 'गवर्नर ताकेशी ओनागा एंड द यूएस बेसिज़ इन ओकिनावा: द रोल ऑफ ओकिनावन आइडेंटिटी इन लोकल पॉलिटिक्स', *न्यू वॉइसेज़ इन जापानी स्टडीज़,* अंक 10, 2018, पृ. 29-51

14. अनिता होफ़्शनाइडर, 'द फाइट टू सेव चामोरो, अ लैंग्वेज़ द यूएस मिलिटरी ट्राइड टू डेस्ट्रॉय', *द गार्जियन,* फरवरी 12, 2020

15. मेगन ब्लैक, *मिलिटराइज्ड करंट्स: टुवार्ड अ डिकोलोनाइज्ड फ्यूचर इन एशिया एंड द पैसिफिक,* यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, मिनियापोलिस, 2011

अतिथि व्याख्याता

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (TISS)

तुलजापुर कैम्पस (महाराष्ट्र)